

The Bombay Sappers War Memorial

The Bombay Engineer Group, popularly known as 'The Bombay Sappers', is one of the three Groups of the Corps of Engineers. The origin of the Group can be traced back to a company of Pioneer Lascars raised in Bombay in 1777 as a part of the Bombay Presidency. However, according to the officially accepted records, the history of the Bombay Engineer Group dates back to 1820, when the Pioneer Lascars were re-organized into Sappers and Miners. Recognizing the services rendered by the Group during the First World War, the title 'Royal' was awarded to it in 1921.

The Bombay Sappers and Miners earned their first Battle Honour, Beni-Boo-Ali, in Arabia in 1821 i.e within a year of reorganizing. Since then, the Group has given an excellent account of itself with 34 Battle Honours and 25 Theatre Honours during the pre-independence era and three Battle Honours and six Theatre Honours, 10 COAS Unit Citations, two COAS Certificate of Appreciation, two VCOAS Unit Appreciation 50 GOC-in-C Unit Citations and one GOC-in-C Certificate of Appreciation after independence, besides six Governor Citations which are a testimony to the devotion and dedication of the gallant soldiers of the Group.

The Group is accredited with the Victoria Cross awarded to 2Lt (later Lt Gen) PS Bhagat for the most conspicuous gallantry in the Middle East in World War II, the Param Vir Chakra awarded to 2Lt (later Maj) RR Rane for clearing of mine fields and road blocks in Rajouri sector during 1948 Indo-Pak War and the Ashok Chakra awarded to Nb Sub Gurnam Singh posthumously on 23 Sep 1973 for saving the lives of men under his command during a demonstration for visiting staff and student officers of the Defence Services Staff College. Thus, the Group has the distinction of winning the three highest awards for individual bravery – this is something unique in the annals of the Indian Army.

The Bombay Sappers joined the club of a select few, when they received the Regimental Colours from Shri R Venkataraman, the then President of India, on 21 Feb 1990.

Over the past two centuries, the Bombay Sappers have carved a special niche for themselves in the chronicles of the Indian Army. They have not only proved their prowess in battle, but have also utilised their military and technical skills

in the development of the nation.

The Bombay Sappers War Memorial proudly adorns the entrance to the Parade Ground in remembrance of the officers and men who laid down their lives during the First World War. The foundation was laid on 17th Feb 1923 by Col BB Russel, DSO, RE, who was Commandant of the Centre from 1905-1909 and who had come specifically for this event.

Unveiled by the Governor of Bombay on 10 Sep 1924, the Memorial was built entirely by men of the Corps and comprises a stone cenotaph with inscriptions in English, Urdu, Gurmukhi and Marathi.

In Aug 1979, the base has been extended and stone satellites adorn four corners, each satellite is having four faces of marble on which new inscriptions can be etched, as it had long been desired to periodically update the inscription on the War Memorial so as to cover subsequent operation also. These four satellites have been ceremoniously fenced with an opening on each side to enable memorial services to be conducted.

In 2023, ascending walls adorned with the names of the Bravehearts have been added, to pay tribute to the fallen comrades and commemorate a century of existence of this iconic memorial.

The Bombay Sappers War Memorial is completing 100 years of its existence in 2024 and is a place of reverence over the years. Since 1984, the War Memorial is also used as a logo/symbol of the Bombay Sappers replacing the British Crown adopted during the raising.

An inseparable part of The Bombay Sappers History and Legacy, the Memorial is central to all ceremonial and commemoration parades with a solemn memorial service preceding all other events and activities.

Department of Posts is delighted to issue commemorative postage stamp on Bombay Sappers War Memorial and salutes the Group for their prowess in battle and in the development of the nation.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure : Smt. Vinita Sinha
Cancellation Cachet : Smt. Nenu Gupta
Text : Referenced from content provided by Proponent



डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS

बॉम्बे सैपर्स युद्ध स्मारक
The Bombay Sappers War Memorial



1924 - 2024

विवरणिका BROCHURE

बॉम्बे सैपर्स युद्ध स्मारक

'द बॉम्बे सैपर्स' के नाम से विख्यात बॉम्बे इंजीनियर ग्रुप, कोर ऑफ इंजीनियर्स के तीन ग्रुप्स में से एक है। इस ग्रुप की स्थापना वर्ष 1777 में बॉम्बे प्रेसीडेंसी के अधीन बॉम्बे में गठित पायनियर लस्कर्स की एक कंपनी के रूप में की गई। हालांकि, आधिकारिक रूप से स्वीकृत रिकॉर्ड के अनुसार, बॉम्बे इंजीनियर ग्रुप का इतिहास वर्ष 1820 से आरंभ हुआ, जब पायनियर लस्कर्स को पुनर्गठित कर इसे सैपर्स एंड माइनर्स नाम दिया गया। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान इस ग्रुप द्वारा दी गई सेवाओं को ध्यान में रखते हुए, वर्ष 1921 में इसे 'रॉयल' की उपाधि से विभूषित किया गया।

बॉम्बे सैपर्स एंड माइनर्स ने अपने पुनर्गठन के पहले ही साल अर्थात् 1821 में अपना पहला युद्ध सम्मान, बेनी-बू-अली, अरब में अर्जित किया। तब से, इस ग्रुप ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए अनेक सम्मान प्राप्त किए हैं। इनमें स्वतंत्रता-पूर्व प्राप्त 34 युद्ध सम्मान एवं 25 थिएटर सम्मान और स्वतंत्रता-पश्चात् प्राप्त 3 युद्ध सम्मान और 6 थिएटर सम्मान, 10 सीओएस यूनिट प्रशस्ति पत्र, 2 सीओएस प्रशस्ति प्रमाण-पत्र, 2 वीसीओएस यूनिट प्रशस्ति पत्र, 50 जीओसी-इन-सी यूनिट प्रशस्ति पत्र और 1 जीओसी-इन-सी प्रशस्ति प्रमाण-पत्र के साथ-साथ 6 गवर्नर प्रशस्ति पत्र भी शामिल हैं; जो इस ग्रुप के वीर सैनिकों की निष्ठा और प्रतिबद्धता का प्रमाण हैं।

बॉम्बे इंजीनियर ग्रुप के 2 लेफ्टिनेंट (बाद में लेफ्टिनेंट जनरल) पी. एस. भगत को द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान मध्य-पूर्व में असाधारण वीरता प्रदर्शन के लिए विक्टोरिया क्रॉस से सम्मानित किया गया। वर्ष 1948 के भारत-पाक युद्ध के दौरान राजौरी सेक्टर में दुश्मन द्वारा बिछाए गए विस्फोटकों और सड़क अवरोधों को हटाने के लिए 2 लेफ्टिनेंट (बाद में मेजर) आर. आर. राणे को परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया और 23 सितंबर 1973 को रक्षा सेवा स्टाफ कॉलेज के अतिथि स्टाफ और छात्र अधिकारियों के निमित्त एक प्रदर्शन के दौरान अपनी कमान के जवानों की जान बचाने के लिए नायब सूबेदार गुरनाम सिंह को मरणोपरांत अशोक चक्र से सम्मानित किया गया। इस प्रकार, इस ग्रुप को व्यक्तिगत बहादुरी के लिए तीन सर्वोच्च पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है, जो भारतीय सेना के इतिहास में एक अनूठा कीर्तिमान है।

21 फरवरी 1990 को भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरमन ने बॉम्बे सैपर्स को रेजिमेंटल ध्वज प्रदान किया, जिसके फलस्वरूप इन्हें एक विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ।

पिछली दो सदियों में, बॉम्बे सैपर्स ने भारतीय सेना के इतिहास में अपने लिए एक विशेष स्थान बनाया है। इस ग्रुप ने न केवल युद्ध में

अपना कौशल साबित किया है, बल्कि देश के विकास में भी अपने सैन्य और तकनीकी कौशल का प्रयोग किया है।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान अपने प्राणों की आहुति देने वाले अधिकारियों और जवानों की स्मृति में परेड ग्राउंड के प्रवेश-द्वार पर बॉम्बे सैपर्स युद्ध स्मारक बनाया गया। इस स्मारक की नींव कर्नल बी. बी. रसेल, डीएसओ, आरई द्वारा 17 फरवरी 1923 को रखी गई थी। कर्नल रसेल वर्ष 1905 से 1909 तक केंद्र के कमांडेंट थे और विशेष रूप से इस कार्यक्रम के लिए यहाँ आए थे।

कोर के ही जवानों द्वारा निर्मित इस स्मारक का अनावरण 10 सितंबर 1924 को बॉम्बे के गवर्नर द्वारा किया गया। इसमें लगाई गई स्मारक शिला पर अंग्रेजी, उर्दू, गुरुमुखी और मराठी में शिलालेख उत्कीर्णित है।

अगस्त 1979 में इस स्मारक के बेस का विस्तार किया गया और इसके चारों कोनों पर चार सुंदर शिलाएँ प्रस्थापित की गईं, जिन पर नवीन शिलालेख उत्कीर्णित किए जा सकते हैं। इसकी आवश्यकता हमेशा से महसूस की जा रही थी, ताकि इस पर भविष्य की युद्धगाथाओं की कहानियाँ लिखी जा सकें। इन चारों स्मारक शिलाओं को इस प्रकार बनाया गया है ताकि यहाँ स्मारक समारोह आयोजित किए जा सकें।

शहीद जवानों को श्रद्धांजलि देने और इस प्रतिष्ठित स्मारक के निर्माण के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में, वर्ष 2023 में इस स्मारक में दीवारों का निर्माण किया गया, जिन पर शूरवीर सैनिकों के नाम अंकित किए गए हैं।

2024 में बॉम्बे सैपर्स युद्ध स्मारक के निर्माण के 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह स्मारक स्थल वर्षों से सैनिकों के लिए श्रद्धा का केंद्र रहा है। बॉम्बे सैपर्स के गठन के समय इसके लोगो में ब्रिटिश हुकूमत का निशान अंकित था। 1984 में इस युद्ध स्मारक को, बॉम्बे सैपर्स के लोगो/प्रतीक चिह्न के रूप में भी अपनाया गया है।

यह युद्ध स्मारक, बॉम्बे सैपर्स के इतिहास और विरासत का एक अभिन्न अंग है। विभिन्न समारोहों और स्मारक परेडों के इस आयोजन स्थल पर कार्यक्रम की शुरुआत श्रद्धांजलि अर्पित कर की जाती है।

डाक विभाग, बॉम्बे सैपर्स युद्ध स्मारक पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है और इस समूह के युद्ध कौशल तथा राष्ट्र के विकास में योगदान को नमन करता है।

आभार :

डाक-टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ : श्रीमती विनीता सिन्हा

विवरणिका

विरूपण कैंशे : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक टिकटें	: 302350
Stamps Printed	: 302350
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00